समाजशास्त्र (039)

अंक योजना

कक्षा- XII (2025-26)

	खंड-क	
1	क) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।	1
2	ग) A सत्य है लेकिन R असत्य है।	1
3	घ) I और IV	1
4	ख) यह कंपनी के लिए लागत को कम रखती है।	1
5	क) वर्ण एक क्षेत्रीय वर्गीकरण है।	1
6	ख) इसने भारत को विश्व के अन्य भागों में देखे गए पहचान-आधारित संघर्षों और गृह युद्धों से बचने में मदद की।	1
7	घ) एक समुदाय द्वारा झेली गई असमानताओं या अन्याय को दूर करने के उपाय अन्य समुदायों से विरोध को उत्प्रेरित कर सकते हैं।	1
8	घ) यह क्षेत्र उन्हें मूल रूप में यह पढ़ने की सुविधा देता था कि ग्रंथों में महिलाओं और दलितों के बारे में क्या कहा गया है।	1
9	ग) कानूनों के बावजूद, भेदभाव और सामाजिक बहिष्करण के नए रूप उभरते हैं और जागरूकता लाने के लिए निरंतर सामाजिक अभियान की आवश्यकता होती है।	1
10	ख) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।	1
11	घ) सामाजिक आंदोलनों को अव्यवस्था लाने वाली शक्तियों के रूप में देखा गया, जो समाजशास्त्र का एक महत्वपूर्ण विषय था।	1
12	ग) बोल्शेविक क्रांति एक उद्धारक सामाजिक आंदोलन है।	1
13	ग) OBC केवल हिंदू धर्म तक ही सीमित हैं।	1
14	ग) II, I, III, IV	1
15	क) राष्ट्र-राज्य राष्ट्रवाद के उदय से निकटता से जुड़े हैं।	1
16	ग) A सत्य है लेकिन R असत्य है।	1
	खंड-ख	
17	• माल्थस के सिद्धांत के अनुसार, जनसंख्या ज्यामितीय प्रगति में बढ़ती है, जबकि कृषि उत्पादन केवल अंकगणितीय प्रगति में बढ़ सकता है।	2

	• उनके अनुसार, मानवता के पास अपनी जनसंख्या वृद्धि को स्वैच्छिक रूप से कम करने की सीमित क्षमता है।	
18	• हाँ। • एक संस्कृति में जो शारीरिक 'पूर्णता' को महत्व देती है, 'पूर्ण शरीर' से सभी विचलन असामान्यता, दोष और विकृति को दर्शाते हैं। • सामान्य धारणा दिव्यांगता को पिछले कर्मों के प्रतिफल के रूप में देखती है जिससे कोई छुटकारा नहीं हो सकता। भारत में प्रमुख सांस्कृतिक निर्माण इसलिए दिव्यांगता को अनिवार्य रूप से व्यक्ति की विशेषता के रूप में देखता है। **अथवा** • नहीं। • स्त्री पुरुष तुलना • सुल्ताना का सपना	2
19	• हाँ। • ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले कई लोग ग्रामीण गैर-कृषि गतिविधियों में कार्यरत हैं या उन पर आधारित आजीविका चलाते हैं। • उदाहरण के लिए, डाक और शिक्षा विभाग जैसी सरकारी सेवाओं में नियोजित ग्रामीण निवासी, कारखाने के श्रमिक, या सेना में कार्यरत लोग हैं, जो गैर-कृषि गतिविधियों से अपनी आजीविका कमाते हैं।	2
20	• "राज्य-राष्ट्र" के निर्माण की सफल रणनीतियाँ सांस्कृतिक मान्यता की उत्तरदायी नीतियों को तैयार करके विविधता को रचनात्मक रूप से समायोजित कर सकती हैं और करती भी हैं। • वे राजनीतिक स्थिरता और सामाजिक सद्भाव के दीर्घकालिक उद्देश्यों को सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी समाधान हैं।	2
21	• कोई भी सामाजिक स्तरीकरण प्रणाली पीढ़ियों तक तब तक नहीं टिक सकती जब तक कि इसे व्यापक रूप से या तो उचित या अपरिहार्य नहीं माना जाता। • जाति व्यवस्था, उदाहरण के लिए, शुद्धता और अशुद्धता के विरोध के संदर्भ में न्यायसंगत ठहराई जाती है, जिसमें ब्राह्मणों को उनके जन्म और व्यवसाय के आधार पर सर्वोच्च और दलितों को सबसे निम्न माना जाता है।	2
22	• अल्पसंख्यक का समाजशास्त्रीय अर्थ यह भी दर्शाता है कि अल्पसंख्यक के सदस्य एक सामूहिकता बनाते हैं - यानी, उनमें समूह एकजुटता, एकजुटता और अपनेपन की मजबूत भावना होती है। • यह नुकसान से जुड़ा है क्योंकि पूर्वाग्रह और भेदभाव के अनुभव से आमतौर पर समूह के भीतर की वफादारी और हितों की भावनाएं बढ़ जाती हैं। **अथवा** भारतीय राष्ट्रवाद में, प्रमुख प्रवृत्ति समावेशी और लोकतांत्रिक दृष्टिकोण से चिह्नित थी। • समावेशी क्योंकि यह विविधता और बहुलता को मान्यता देती थी। लोकतांत्रिक क्योंकि यह भेदभाव और बहिष्करण को दूर करने और एक न्यायसंगत और समतामूलक समाज लाने का प्रयास करती थी।	2

23	• लोग अक्सर अपने लिंग, धर्म, जातीयता, भाषा, जाति और विकलांगता के कारण भेदभाव और बहिष्करण का सामना करते हैं। • उदाहरण के लिए - विशेषाधिकार प्राप्त पृष्ठभूमि की महिलाएं सार्वजनिक स्थानों पर यौन उत्पीड़न का सामना कर सकती हैं। अल्पसंख्यक धार्मिक या जातीय समूह के एक मध्यम वर्गीय पेशेवर को महानगरीय शहर में भी मध्यम वर्गीय कॉलोनी में आवास पाने में कठिनाई हो सकती है। (कोई दो उदाहरण।) • लोग अक्सर अन्य सामाजिक समूहों के बारे में पूर्वाग्रह रखते हैं।	2
24	• श्रमिक पहले से ही थक जाते हैं। • श्रमिक स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेंगे। • उत्पादकता, कार्यक्षमता और लाभ में वृद्धि।	2
25	• उदाहरण के लिए, जो 1857 में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासकों के लिए 'विद्रोह' या 'बगावत' था, वह भारतीय राष्ट्रवादियों के लिए 'स्वतंत्रता का प्रथम संग्राम' था। • विद्रोह कथित वैध प्राधिकार, यानी ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह का कार्य है। स्वतंत्रता के लिए संघर्ष ब्रिटिश शासन की वैधता को ही चुनौती देता है। यह दिखाता है कि लोग सामाजिक आंदोलनों से अलग-अलग अर्थ जोड़ते हैं।	2
	खंड-ग	
26	• प्राप्तकर्ता क्षेत्र- • स्थानीय श्रमिकों के साथ संघर्ष। • स्थानीय श्रमिकों के लिए कम रोजगार। • आपूर्तिकर्ता क्षेत्र- • कार्यबल का स्त्रीकरण। • महिला श्रमिकों के लिए अधिक असुरक्षा।	4
27	• "दलित वर्गों" और विशेष रूप से अछूत जातियों को संगठित करने के प्रयास राष्ट्रवादी आंदोलन से पहले, उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में शुरू हो गए थे। यह जाति स्पेक्ट्रम के दोनों छोरों से की गई पहल थी - उच्च जाति के प्रगतिशील सुधारकों के साथ-साथ निम्न जातियों के सदस्यों द्वारा भी। • राष्ट्रवादी आंदोलन में प्रमुख दृष्टिकोण जाति को एक सामाजिक बुराई और भारतीयों को विभाजित करने की औपनिवेशिक चाल के रूप में मानने का था। लेकिन राष्ट्रवादी नेता एक साथ निम्न जातियों के उत्थान के लिए काम करने, अछूतता और अन्य जाति प्रतिबंधों के उन्मूलन की वकालत करने, और साथ ही जमींदार उच्च जातियों को यह आश्वासन देने में सक्षम थे कि उनके हितों की भी देखभाल की जाएगी।स्वतंत्रता के बाद भारतीय राज्य ने इन विरोधाभासों को विरासत में पाया और प्रतिबिंबित किया। एक ओर, राज्य जाति के उन्मूलन के लिए प्रतिबद्ध था और इसे स्पष्ट रूप से संविधान में लिखा। दूसरी ओर, राज्य कट्टर सुधारों को लागू करने में असमर्थ और अनिच्छुक था जो जाति असमानता के आर्थिक आधार को कमजोर करता।	4

28	• नागरिक समाज उस व्यापक क्षेत्र को दिया गया नाम है जो परिवार के निजी क्षेत्र से परे है, लेकिन राज्य और बाजार दोनों के क्षेत्र से बाहर है। • नागरिक समाज सार्वजनिक क्षेत्र का गैर-राज्य और गैर-बाजार हिस्सा है जिसमें व्यक्ति स्वेच्छा से एकजुट होकर संस्थान और संगठन बनाते हैं। यह सक्रिय नागरिकता का क्षेत्र है जहां व्यक्ति सामाजिक मुद्दों को उठाते हैं। • आज नागरिक समाज संगठनों की गतिविधियों का और भी व्यापक दायरा है, जिसमें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों के साथ वकालत और पैरवी की गतिविधि के साथ-साथ विभिन्न आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी भी शामिल है। • मुद्दे विविध हैं, जिनमें भूमि अधिकारों के लिए आदिवासी संघर्ष, शहरी शासन में विकेंद्रीकरण, महिलाओं के विरुद्ध हिंसा के खिलाफ अभियान, बांधों से विस्थापित लोगों का पुनर्वास आदि शामिल हैं।	4
29	• नहीं। पश्चिमीकरण के विभिन्न प्रकार थे। • एक प्रकार भारतीयों के एक अल्पसंख्यक वर्ग के माध्यम से पश्चिमी संस्कृति के साथ पहले संपर्क में आने वाले पश्चिमीकृत उप-सांस्कृतिक पैटर्न के उदय को संदर्भित करता है। इसमें भारतीय बुद्धिजीवियों की उप-संस्कृति शामिल थी जिन्होंने न केवल कई संज्ञानात्मक पैटर्न, या सोचने के तरीके, और जीवन शैली को अपनाया, बल्कि इसके विस्तार का समर्थन भी किया। • इसके अलावा पश्चिमी सांस्कृतिक लक्षणों का सामान्य प्रसार भी हुआ है, जैसे नई प्रौद्योगिकी का उपयोग, पोशाक, भोजन, और आम तौर पर लोगों की आदतों और शैलियों में परिवर्तन। • देश भर में मध्यम वर्ग के बहुत बड़े वर्ग के घरों में टेलीविजन सेट, फ्रिज, किसी प्रकार का सोफा सेट, लिविंग रूम में डाइनिंग टेबल और कुर्सी है।	4
30	• 1960 के दशक से कृषि विकास द्वारा ग्रामीण सामाजिक संरचना में बदलाव का एक तरीका मध्यम और बड़े किसानों का समृद्ध होना था जिन्होंने नई तकनीकों को अपनाया। • कई कृषि समृद्ध क्षेत्रों में, प्रभुत्वशाली जातियों के संपन्न किसानों ने कृषि से अपने लाभ को अन्य प्रकार के व्यवसायिक उद्यमों में निवेश करना शुरू कर दिया। • विविधीकरण की इस प्रक्रिया ने नए उद्यमी समूहों को जन्म दिया जो ग्रामीण क्षेत्रों से बाहर निकलकर इन विकासशील क्षेत्रों के बढ़ते शहरों में चले गए। • ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में उच्च शिक्षा, विशेष रूप से निजी व्यावसायिक कॉलेजों के प्रसार ने नए ग्रामीण अभिजात वर्ग को अपने बच्चों को शिक्षित करने की अनुमति दी।	4
31	• विनिर्माण का पतन • स्वदेशी शहरी केंद्रों का पतन • जब ब्रिटिश ने भारतीय राज्यों पर कब्जा किया, तब तंजावुर, ढाका और मुर्शिदाबाद जैसे शहरों ने अपने दरबार खो दिए। विनिर्माण के पतन के कारण भारत में अधिक लोग कृषि की ओर लौट गए। **अथवा**	4

	• पूंजीवाद एक आर्थिक प्रणाली है जिसमें उत्पादन के साधन निजी स्वामित्व में होते हैं और बाजार प्रणाली के भीतर लाभ संचय के लिए संगठित किए जाते हैं। • पश्चिम में पूंजीवाद दुनिया के बाकी हिस्सों की यूरोपीय खोज, उसकी संपत्ति और संसाधनों की लूट, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अभूतपूर्व विकास से उभरा। • पूंजीवाद की शुरुआत से ही इसकी विशेषता थी इसकी गतिशीलता, विकास करने, विस्तार करने, नवाचार करने की क्षमता। • इसकी एक और विशेषता इसका वैश्विक स्वरूप था।	
32	• इन समूहों के लिए, जिन्हें स्वतंत्रता के बाद की विकास नीतियों से सबसे अधिक लाभ हुआ है, जाति का महत्व इसलिए कम होता प्रतीत हुआ क्योंकि इसने अपना काम बहुत अच्छी तरह से किया है। • उनकी जाति की स्थिति यह सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण थी कि इन समूहों के पास तीव्र विकास के अवसरों का पूरा लाभ उठाने के लिए आवश्यक आर्थिक और शैक्षिक संसाधन थे। • विशेष रूप से, उच्च जाति के अभिजात वर्ग सब्सिडी वाली सार्वजनिक शिक्षा, विशेष रूप से विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा और प्रबंधन में व्यावसायिक शिक्षा का लाभ उठाने में सक्षम थे। • इस प्रारंभिक अवधि में, बाकी समाज पर उनकी बढ़त (शिक्षा के मामले में) ने सुनिश्चित किया कि उन्हें किसी गंभीर प्रतिस्पर्धा का सामना नहीं करना पड़ा। • निश्चित रूप से इन समूहों की तीसरी पीढ़ियों के लिए उनकी आर्थिक और शैक्षिक पूंजी ही जीवन के सर्वोत्तम अवसरों को सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त है। इन समूहों के लिए अब जाति का प्रभाव सिर्फ धार्मिक कार्यों या विवाह आदि में ही देखने को मिलता है।	4
	खंड-घ	
33 क)	• परिवार के एक सामाजिक संस्था के रूप में कार्य करने में बाधा आएगी। • समाज की निरंतरता प्रभावित होगी। • एक लिंग पर समग्र दबाव में वृद्धि होगी। • अपराधों में वृद्धि होगी।	4
33 ख)	• पुत्र की प्राथमिकता। • दहेज जैसे सामाजिक-सांस्कृतिक कारण। • बालिकाओं की उपेक्षा।	2
	(दृष्टिबाधित उम्मीदवारों के लिए)	
33 क)	• परिवार के एक सामाजिक संस्था के रूप में कार्य करने में बाधा आएगी। • समाज की निरंतरता प्रभावित होगी। • एक लिंग पर समग्र दबाव में वृद्धि होगी। • अपराधों में वृद्धि होगी।	4
33 ख)	• पुत्र की प्राथमिकता। • दहेज जैसे सामाजिक-सांस्कृतिक कारण। • बालिकाओं की उपेक्षा।	2

34	• निजी कंपनियों, विशेषकर विदेशी फर्मों को पहले सरकार के लिए आरक्षित क्षेत्रों में निवेश के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिसमें दूरसंचार, नागरिक उड्डयन, बिजली आदि शामिल हैं। • उद्योग खोलने के लिए लाइसेंस की अब आवश्यकता नहीं है। • विदेशी उत्पाद अब भारतीय दुकानों में आसानी से उपलब्ध हैं। • कई भारतीय कंपनियां - छोटी और बड़ी, बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा खरीद ली गई हैं। • सरकार विनिवेश और आउटसोर्सिंग की नीति का पालन कर रही है। • स्थायी कर्मचारियों की संख्या में कमी। • असंगठित क्षेत्र का विस्तार।	6
35	• समय के साथ निरंतर सामूहिक कार्रवाई। • राज्य के विरुद्ध निर्देशित। • सार्वजनिक मुद्दे पर परिवर्तन की मांग के रूप में सामने आता है। • कुछ स्तर का संगठनात्मक ढांचा आवश्यक। • प्रभावी नेतृत्व और संरचना महत्वपूर्ण। • साझा उद्देश्य और विचारधाराएं अनिवार्य।	6